

सुर और अभिनय का पहला संगम

कानन बाला

दस साल की उम्र में पहली फिल्म की. पारिश्रमिक तय हुआ पच्चीस रुपए. लेकिन उसमें से भी मिले सिर्फ पांच रुपए. यकीन नहीं होता. लेकिन कानन बाला भारतीय रजतपट की पहली हीरोइन हैं जिनमें अभिनय और सुर का अनोखा संगम था. तभी तो कानन बाला को न कभी बंगला सिनेमा भुला सकेगा, न हिन्दी सिनेमा.

दस वर्ष की छोटी उम्र थी तब जब कानन बाला दास के पिता रतन चन्द्र दास का निधन हो गया. पिता की मृत्यु का तो दुख था ही, साथ ही तब जैसे सिर पर आसमान गिर गया जब पता चला पिता कर्ज में जकड़े हुए थे. निधनता ने उन्हें अभावों से परिचित कराया. अब इन सबसे जूझने की जिम्मेदारी कानन पर पड़ी. कानन मंच पर इधर-उधर गा लेती थीं. तभी एक परिचित ने उन्हें मदन थियेटर्स की एक फिल्म में रोल दिलाया. यह मूक फिल्म थी *जयदेव*, कवि जयदेव के जीवन पर आधारित. कानन बाला ने इसमें राधा की भूमिका की थी. दर्शकों को वह बहुत प्यारी लगीं. मदन थियेटर्स ने इस भूमिका के लिए उन्हें 25 रुपए देना स्वीकार किया था. लेकिन जब फिल्म पूरी हो गई तो मिले केवल पांच रुपए. 20 रुपए पता नहीं कौन हड़प गया. हालांकि *जयदेव* सफल रही.

दर्शकों को राधा के रूप में कानन बाला अच्छी भी लगीं. परंतु पुराने विचारों के लोगों का लड़की का इस तरह फिल्मों में काम करना अशोभनीय था. परिणाम यह हुआ कि एक ही फिल्म में काम करने के बाद उन्हें सेल्यूलायड से रिश्ता तोड़ने पर मजबूर होना पड़ा. कठिनाई झेलते, मुसीबतें उठाते किसी तरह चार साल बिताए. तब तक *आलमआरा* का जादू पूरे भारतीय सिनेमा पर सर चढ़ कर बोलने लगा था. उन्हीं दिनों ज्योतिष बनर्जी ने आग्रह कर कानन बाला को *जोरबोरात* में बतौर हीरोइन पेश किया. यह बात 1931 की है. इस फिल्म से कानन बाला का फिल्म मीडिया में जो रिश्ता जुड़ा तो वह अगले ढाई-तीन दशक तक जुड़ा रहा. यह रिश्ता तभी टूटा जब कानन बाला वृद्ध हो गईं और उन्होंने अभिनय और गायन से अवकाश ले लिया.

कानन बाला मूल रूप में बंगला फिल्म की हीरोइन थीं. लेकिन चौथे दशक में कुछ ऐसी परम्परा थी कि जो फिल्में बंगला में बनती थीं वे हिन्दी में भी आती थीं. इसीलिए कानन बाला की ढेर सारी फिल्में हिन्दी दर्शकों के सामने आईं. यदि कहा जाए कि बंगल की हीरोइनों में जो प्रसिद्धि हिन्दी दर्शकों में कानन बाला को मिली, वह किसी भी अन्य बंगला तारिका अर्जित नहीं कर सकी, तो गलत न होगा. इसका श्रेय जहां उनके मधुर स्वर को था वहीं इसकी एक वजह थी उनकी असाधारण अभिनय-प्रतिभा और मनमोहक रूप माधुर्य. कानन देवी की असाधारण प्रतिभा का अनुमान आप इससे भी लगा सकते हैं कि उन्होंने कुछ फिल्मों में पुरुष भूमिकाएं कीं और उनमें उन्हें पसंद किया गया. ये बंगला भाषी फिल्में थीं *प्रहलाद*, *विष्णु प्रिया* और *कंस वध*. प्रफुल्ल घोष के निर्देशन में बनी *श्री गौरांग*, *मामोशी* तथा *गर्वास स्कूल* और *विष वृक्ष*. कानन बाला की शुरु से तमन्ना थी कि वह न्यू थियेटर्स की फिल्मों में काम करें. जब पी.सी. बरुआ ने *देवदास* शुरू की तो उन्होंने कानन बाला को पारो की भूमिका करने का ऑफर दिया. कानन शरत बाबू रचित उस पात्र



को करने को उत्सुक भी थीं. मगर उन दिनों कानन राधा फिल्म्स के साथ अनुबंध में बंधी थीं. राधा फिल्म्स से मुक्ति प्राप्त करते ही निर्माता बी.आर. सरकार ने उन्हें न्यू थियेटर्स में 136 रुपए मासिक वेतन पर आमंत्रित कर लिया. न्यू थियेटर्स में कानन बाला ने *मुक्ति* में काम किया. यह एक ऐसी शिक्षित युवती की कहानी थी जिसने अपने पति से संबंध-विच्छेद कर लिया. बरुआ के निर्देशन में बनी यह फिल्म उसी तरह समय से आगे थी जैसे वीं शांताराम की *दुनिया न माने*. *मुक्ति* में काम करके कानन बाला को अद्वितीय सम्मान मिला. उन्हें अब कानन बाला की जगह कानन देवी का नाम मिल गया.

कानन बाला अब तक एक लोकप्रिय एवं प्रतिष्ठित कलानेत्री बन चुकी थीं. वह एकमात्र अभिनेत्री थीं जिन्हें उनके चाहने वालों ने इतना सम्मान दिया और कानन बाला से कानन देवी बना दिया. हिन्दी दर्शकों के सामने *मुक्ति* के बाद कानन देवी *स्ट्रीट सिंगर* में आईं. इस फिल्म में उन्होंने कुन्दन लाल सहगल के साथ अभिनय किया. *स्ट्रीट सिंगर* का निर्देशन फणि मजूमदार ने किया. 1937 में बनी *विद्यापति* ने कानन को देश व्यापी ख्याति प्राप्त दिलाई. पृथ्वीराज कपूर, सान्याल, लीला देसाई, के.सी. डे के साथ कानन बाला भी थीं. जो कवि की प्रेमिका थी. कानन बाला की अगली फिल्म थी *सपेरा*. काजी नजरुल इस्लाम की कहानी पर आधारित इस फिल्म का निर्देशन देवकी बोस ने किया था. इसमें नवाब ने एक संपेरे का रोल किया था. इस रोल के लिए नवाब ने अपने सब दांत निकलवा दिए थे. शूटिंग के दौरान सांपों ने उनके चेहरे पर 80 जगहों पर काटा था. फिल्म में कानन बाला ने एक ऐसी युवती की भूमिका की थी जिसे सपेरा लोगों की कुदृष्टि से बचाने के लिए युवक बनाकर अपने साथ रखता है. नाम था उसका चंदन. परन्तु एक दिन यह भेद खुल जाता है. तब संपेरों की बस्ती में जैसे जलजला आ जाता है. *मुक्ति* की तरह *सपेरा* भी लीक से हटी फिल्म थी. फिल्म बड़ी चर्चित हुई. *जवानी की रीत* में कानन देवी ने एक अत्याधिक आधुनिका की भूमिका की. *हार जीत* उनकी अगली फिल्म थी. 1940 में नितिन बोस के निर्देशन में *परिचय* आई. और इस फिल्म की समाप्ति के साथ न्यू थियेटर्स से कानन बाला का रिश्ता टूट गया. अनबन पारिश्रमिक को लेकर हुई. जितना कानन चाहती थीं, न्यू थियेटर्स के संचालकों को स्वीकार न हुआ. दर्द भरे दिल से वह इस संस्था से अलग हो गईं जहां रहकर उन्होंने कई यादगार फिल्में दी थीं.

न्यू थियेटर्स से अलग होने के बाद कानन बाला ने कुछ समय विश्राम किया. फिल्मों में एक्टिंग करते-करते वह थक गई थीं. कुछ समय बाद पी.सी. बरुआ से उनकी मुलाकात हुई. बरुआ के निर्देशन में वह *मुक्ति* जैसी मशहूर फिल्म दे चुकी थीं. उन्होंने कानन से

• पी.सी. बरुआ के साथ कानन बाला बंगला फिल्म शेष उत्तर में.







उनकी निजी संस्था एम.पी. प्रोडक्शंस के लिए काम करने को कहा. कानन ने स्वीकार कर लिया. एम.पी. के लिए उनकी पहली फिल्म थी बंगला में *शेष उत्तर*. फिल्म की बड़ी प्रशंसा हुई. समीक्षकों ने कानन के काम को सराहा. *जोगा जोग* उनकी अगली फिल्म थी जो सुशील मजूमदार के निर्देशन में बनी थी. यह फिल्म जबरदस्त हिट साबित हुई. और फिर आई प्रमेन्द्र मित्र की *बिदेशनी*. बरुआ के साथ की गई *जवाब* कानन देवी की यादगार फिल्म थी. इसमें बरुआ ने पहली बार नायक को इंसान के रूप में पेश किया–एक ऐसा इंसान जिसमें अभी तक के चित्रित नायक के समान केवल अच्छाइयां ही अच्छाइयां नहीं थीं, उसमें दुर्बलताएं भी थीं. साधारण पुरुष के समान उसमें अच्छाइयों और दुर्बलताओं का मिला-जुला रूप था. *जवाब* हिट हुई और फिल्म अपने एक गीत *यह दुनिया यह दुनिया तूफान मेल*... की तरह दौड़ी. तब वह तीस पार कर चुकी थीं जब कानन देवी ने विवाह किया. उनके पति हरिदास भट्टाचार्य पश्चिमी बंगाल के गवर्नर कैलाशनाथ काटजू के सहायक थे. विवाह के समय कानन बाला स्वयं प्रोड्यूसर बन चुकी थीं और निर्मात्री संस्था श्रीमती पिक्चर्स की स्थापना कर चुकी थीं.

इससे पूर्व कानन ने देवकी बोस के निर्देशन में *कृष्ण लीला* बरुआ के निर्देशन में *हास्पिटल* की बाहर के निर्माताओं के साथ कानन बाला की अंतिम फिल्म *चन्द्रशेखर* थी. अशोक कुमार और छवि विश्वास उनके सहयोगी कलाकार थे. कानन देवी की रोमांटिक रोल में यह आखिरी फिल्म थी. *चन्द्रशेखर* करने के बाद कानन देवी विदेश यात्रा पर गईं. इस यात्रा के दौरान उन्होंने स्टूडियो की यात्रा की. फिल्मी हस्तियों से मिलीं फिल्म निर्माण के विषय में नई-नई मालूमात कीं और स्वदेश लौट कर उन्होंने श्रीमती प्रोडक्शंस की स्थापना की. उन्होंने केवल बंगला में फिल्में बनाईं. *अन्याय* उनकी पहली फिल्म थी. *बामार मात* अगली फिल्म थी. जब श्रीमती प्रोडक्शंस की *मेज दीदी* प्रदर्शित हुई तब वह वास्तव में श्रीमती बन चुकी थीं. कानन बाला ने शरत चंद्र चट्टोपाध्याय के प्रसिद्ध उपन्यास *श्रीकांत* के फिल्मीकरण के अधिकार खरीद कर उस पर कई फिल्में बनाईं. उस बड़े उपन्यास पर श्रीकांत से जुड़े नारी पात्रों को लेकर अलग-अलग फिल्में बनाईं. इन फिल्मों में *श्रीकांत, राजलक्ष्मी और श्रीकांत, अन्नदा दीदी, दर्प चूर्ण, अभया-ओ-श्रीकांत* आदि प्रमुख थीं. इस फिल्म को सर्वश्रेष्ठ चित्र का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला था. कालोविवारी के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में कानन देवी की यह फिल्म विशेष रूप से आमंत्रित की गई थी.

कानन देवी एक श्रेष्ठ अभिनेत्री तो थीं ही, वह बहुत ही मधुर गायिका भी थीं. एक युग बीत चुका है उन्हें फिल्मों से संन्यास लिए हुए, लेकिन उनके गाए गीत आज भी याद हो आते हैं. फिल्म *मुक्ति* में गाए उनके गीत *अंबवा की डाली डाली..., अंबवा पे कोयल बोले*... तथा *सांवरिया मन भाया रे*... कानन के गीत खूब गाए गए थे. देवकी बाबू के विद्यापति के गीत *मोरे अंगना में आए आली मैं चाल चलूं मतवाली* और *जाने न दूंगी न जाने दूंगी*... खूब लोकप्रिय हुए थे. फिल्म *जवाब* में कानन का गाया *तूफान मेल ये दुनिया, ये दुनिया तूफान मेल*.. और *ए चांद छुप न जाना*... जिन्होंने सुने हैं, आज भी नहीं भूले हैं.

हालांकि कानन देवी ने दर्जनों हिन्दी फिल्में कीं लेकिन सब कलकत्ता में. बस एक फिल्म में काम करने वह मुंबई आईं. यह फिल्म थी *चंद्रशेखर*, कानन देवी की अंतिम रोमांटिक फिल्म. कुछ दिनों के लिए वह लखनऊ भी गई थीं, उस्ताद अल्लाह रक्खा से ध्रुपद सीखने. यह तब की बात है जब वह राधा फिल्म्स में थीं. उन्होंने उस्ताद के कहने पर तबला बजाना भी सीखा. लेकिन अभिनय की व्यस्तता के कारण वह इस संगीत साधना को ज्यादा दिन तक जारी नहीं रख पाईं.

अन्नदा दीदी कानन देवी की अंतिम फिल्म थी. यह फिल्म करने के बाद उन्होंने एक्टिंग और प्रोडक्शन दोनों से संन्यास ले लिया. लेकिन ग्रामोफोन कंपनी के लिए गाने गाकर वह रेकार्ड काफी समय तक जारी कराती रहीं. कानन देवी को कई सम्मान मिले. उनको राष्ट्रपति ने पदमश्री से अलंकृत किया. सिनेमा का सबसे बड़ा सम्मान दादा साहेब फालके पुरस्कार से 1977 में प्रदान किया गया. कानन देवी को यह दुनिया छोड़े एक अर्सा हो चुका है, लेकिन जिन लोगों ने उन्हें पर्दे पर देखा है, उनकी फिल्में देखी हैं, उनके गीतों को सुना है, वे बंगाल की इस अभिनेत्री को कभी नहीं भूल सकते. बंगाल ने ऐसी कई अभिनेत्रियां दी हैं जिन्होंने हिन्दी फिल्मों में अभिनय करके दर्शकों का मन जीता है. लेकिन वहां से दूसरी कानन देवी नहीं आई. ऐसी अभिनेत्री जो उनकी तरह सुंदर हो,, उनके समान श्रेष्ठ अभिनय करती हो और उन जैसा मधुर स्वर भी रखती हो.

- बच्चन श्रीवास्तव